पर्यावरणीय विमर्श

सैद्धान्तिकी एवं अनुप्रयोग

संपादक
डॉ. प्रीति अग्रवाल
डॉ. अलका तिवारी

ISBN : 978-81-952128-2-8

मूल्य : छः सौ पचहत्तर रुपये मात्र

पुस्तक	:	**पर्यावरणीय विमर्श : सैद्धान्तिकी एवं अनुप्रयोग**
संपादक	:	डॉ. प्रीति अग्रवाल, डॉ. अलका तिवारी
©	:	संपादक
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस** 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**2021**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मूल्य	:	**675.00**
मुद्रण	:	सार्थक प्रिंटर्स, कानपुर

अनुक्रम

1. जलवायु परिवर्तन और हिमनदों का क्षरण
डॉ. दीपक कोहली 09

2. पर्यावरण के विराट दायरे
प्रो. मंगला रानी 13

3. मॉरीशस और मैन्ग्रुव
सविता तिवारी 23

4. नदियाँ हमारी पुरखिने हैं, बेतरतीब बहता पानी मात्र नहीं
निर्देश निधि 27

5. गंगा के लिए प्राण देने वाले गंगापुत्र : स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद
प्रो. अमरनाथ 32

6. सुनीता नारायण : पर्यावरण संरक्षण के लिए जीवन समर्पित करने वाली 'एक सशक्त महिला'
सौम्या ज्योत्सना 38

7 भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में पर्यावरण चेतना
डॉ. पायल लिल्हारे 42

8. वेद विज्ञान से लोक विश्वास तक पर्यावरण
डॉ. शोभा त्रिपाठी 48

9. बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण और बीमार होते बच्चे
डॉ. प्रीति अग्रवाल 52

10. पर्यावरण प्रदूषण – ज्वलंत समस्या
डॉ. शहनवाज जहाँ 57

11. वर्तमान संकट का दौर और पर्यावरण विमर्श
डॉ. रिंकी सिंह 61

12. ओजोन परत : पृथ्वी पर जीवधारियों का अदृश्य सुरक्षा कवच
मोहित कुमार उपाध्याय 67

13. पर्यावरण संरक्षण एवं स्त्रीवादी आंदोलन
डॉ. शिवानी कन्नौजिया 72

14. 21 वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय विमर्श
डॉ. किरण ग्रोवर 76

15. समकालीन हिंदी उपन्यास में पारिस्थितिक सजगता– संजीव के 'धार' उपन्यास के विशेष सन्दर्भ में
डॉ. हेलन मेरी ए.जे. 84

16. समकालीन हिंदी उपन्यासों में पर्यावरणीय चिंतन
डॉ. प्रीती सिंह 87

16.

समकालीन हिंदी उपन्यासों में पर्यावरणीय चिंतन

डॉ. प्रीती सिंह

पर्यावरण शब्द अनादिकाल से संपूर्ण ब्रह्मांड से जुड़ा हुआ है। पर्यावरण 'परि' व 'आवरण' दो शब्दों से बना है परि का अर्थ है– चारों तरफ तथा आवरण का अर्थ है घेरा। अर्थात कह सकते हैं कि प्रकृति में जो भी चारों ओर परिलक्षित है यथा– वायु, जल ,मृदा, पेड़–पौधे तथा प्राणी आदि सभी पर्यावरण के अंग हैं पर्यावरण अनेक प्राकृतिक तत्वों का समूह है। मनुष्य हो या जीव –जंतु सभी पर्यावरण की ही उपज है। आज मानवीय क्रियाकलापों के द्वारा पर्यावरण के संतुलन में विशेष अंतर होता जा रहा है। वनों के कट जाने से पर्यावरण के संतुलन पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ रहा है इस पारिस्थितिक संकट को दूर करने के लिए पूरा विश्व प्रयत्नशील है। विश्व भर के साहित्यकारों ने भी इस भयंकर समस्या को अपने साहित्य का विषय बनाया है। समकालीन हिंदी साहित्यकारों ने भी इस पारिस्थितिक संकट को चुना है और अपने साहित्य के माध्यम से इस भीषण समस्या से सभी को अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। वर्तमान समय विमर्शों का कहा जा सकता है। जहाँ भी अस्मिता अर्थात पहचान का खतरा है वहाँ पर विमर्श हथियार के रूप में हाशिए के लोगों का साथ दे रहा है। पर्यावरण चिंतन की जब हम बात करते हैं तो साहित्य के आदिकाल से ही हमें प्रकृति के रूप में पर्यावरण दिखाई देता है। जब से साहित्य की रचना शुरू हुई है प्रकृति किसी ना किसी रूप में साहित्य में सदैव विद्यमान रही है। आदिकाल के साहित्य में प्रकृति का चित्र हमें विभिन्न रूपों में देखने को मिलता है बसंत विलास, बीसलदेव रासो, राउलवेल आदि कई ऐसे काव्य हैं जहां पर प्रकृति विभिन्न रूपों में दिखाई देती है विद्यापति का एक गीत दृष्टिगत है–

'डम डम डम्फ दिमिक द्रीमी मादल, रूनु झुनु मंजीर बोल
.....घटिता घटिता धुनि मदंग गरजनि, चंचल स्वर मण्डल करूँ राव
समय बसंत रास रस वर्णन, विद्यापति मति छोमित होति।"[1]